DR. AAKANKSHA RASTOGI

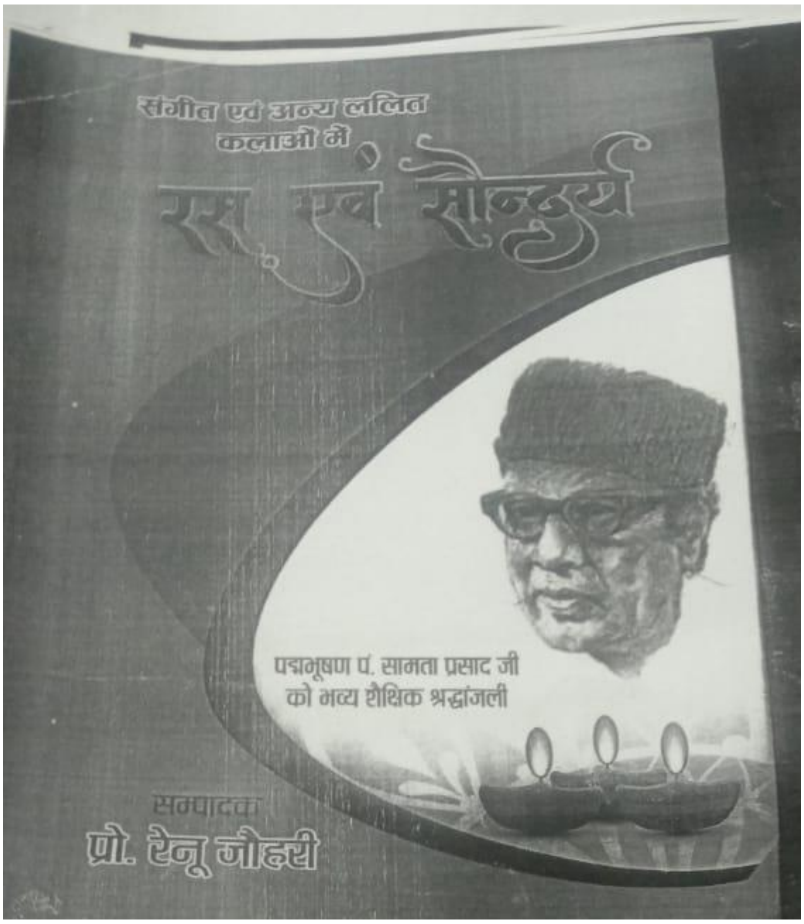

अनुक्रमणिका

अध्याय–1
संगीत, नृत्य एवं नाटक में रस एवं सौंदर्य

● संपादकीय — v

1. किराना एक अमूर्त सौन्दर्य — 1
डॉ. अविराज तायडे

2. ललित कलाओं में संगीत का स्थान — 5
अमरीष प्रजापति, प्रो. शारदा वेलंकर

3. राग यमन की सौन्दर्य परक रस निष्पत्ति — 8
आकाश कुमार, डॉ. विशाल जैन

4. कलाकार की सृजनशीलता में सौन्दर्य : भारतीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में — 16
आकांक्षा पाल, प्रो. पं जयन्त खोत

5. सौंदर्यशास्त्र और नाट्यकला — 20
डॉ. आकांक्षा रस्तोगी

6. उत्तर प्रदेश के संगीत में ताल एवं उसका शास्त्र पक्ष — 25
आलोक मिश्रा

7. फिल्म संगीत में रस एवं सौंदर्य के तत्त्व — 29
आशीष जायसवाल

8. पं. सामता प्रसाद जी के तबला वादन से अलंकृत फिल्मी गीतों में रसध्वनि एवं सौन्दर्य — 34
डॉ. इन्दु शर्मा

संगीत ज्ञान गंगा

पंडित देवेन्द्र वर्मा 'ब्रजरंग'

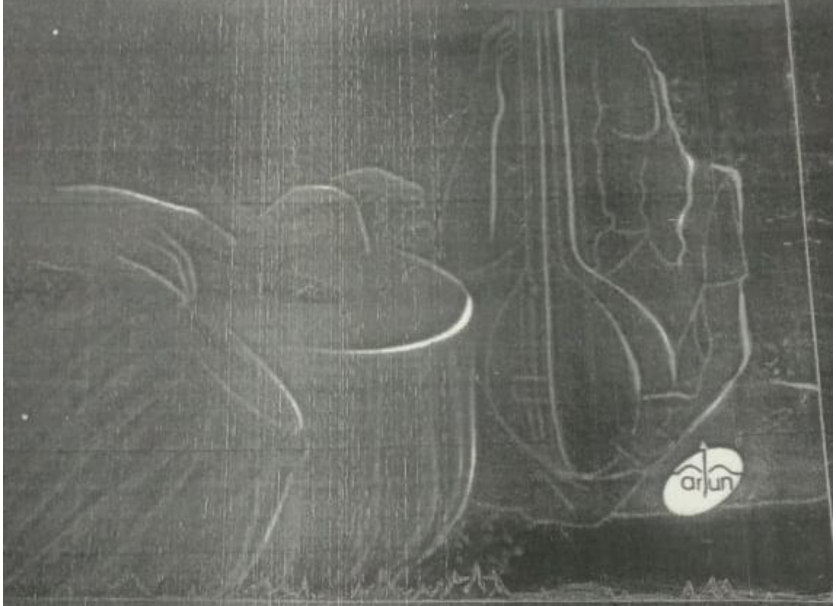

28. संगीत एवं मानव जीवन का अंत: सम्बन्ध 337
–डॉ. प्रदीप कुमार साहनी

29. संगीत के विकास में समाज का योगदान 340
–डॉ. आकांक्षा रस्तोगी

30. संगीत और आध्यात्म 347
–कमलेश शर्मा

31. उत्तर प्रदेश की संगीत समृद्ध विरासत एवं उसे संरक्षित करने में महिला संगीतज्ञों का योगदान 353
–ज्योति

32. Folk Musical Composition in South Indian Music 363
—Dr. R. Ezhil Raman

33. References to Music in Agamic Based Rituals in South India 370
—Dr. C.P.S. Madhuri

34. The Growth of the Music and Dance Compotation (Prabandha & Nirupana) During the 18th Century of Tanjavur Maratha Rulers at South India 382
—Dr. Divya J. Patel

35. Carnatic Music and Its Inter-relationship with Milk Yield in Cows 394
—Dr. J. Sankar Ganesh

36. Need and Importance of Music Education: An Overview 409
—Sudha Sharma

37. The Importance of Music in Aagama Shastra 416
—K. Sahitya

38. Raga and Tala in Indian Music 422
—Mrs. Maanasa Sriram

39. Status of Women Artists in India: A Study 434
—Ms. Mitali M. Katarnikar

40. Harikatha Traditions in Tirupati Region 448
—Mrs. E. Sreelakshmi

DR. PRITI SINGH

10. लोकसंगीत
डॉ. अंजू सुर्यभान फुलझेले
11. संगीत और साहित्य का सहसंबंध 62
प्रा. अनिल प्रल्हाद निंबाळकर
12. बिहार की लोक संगीत परम्पराएं 68
प्रा. बबलू कुमार 'केतन'
13. संगीत और मानसशास्त्र का बाल व किशोर अवस्था में मानसिक फायदे 72
डॉ. वृषाली देशमुख
14. संगीत सृजन और प्रोत्साहन में समाज का प्रभाव 82
डॉ. प्रिया दत्ता
15. संगीत और साहित्य 88
डॉ. प्रतिभा चंद्रहास्य पवित्रकार
16. मानव विकास और स्वास्थ्य पर संगीत का प्रभाव 95
डॉ. क्षमा डी. चव्हाण
17. संगीत एवं मनोविज्ञान 100
डॉ. परमजीत कौर
18. संगीत और साहित्य 108
प्रा. दीपक महादेव जामनिक
19. महाराष्ट्र का लोकप्रिय लोकसंगीत प्रसार माध्यम कीर्तन 116
चारूदत्त गोविंद आफळे
20. शास्त्रीय संगीत और लोकसंगीत का सहसंबंध 119
प्रा. वैशाली एस. चोरपगार
21. लोकसंगीत की लोकरंजनात्मक भूमिका 128
प्रा. डॉ. वनिता तुकारामजी भोपत
22. संगीत का साहित्य से काव्यात्मक संबंध एवं महत्व 131
डॉ० प्रीति सिंह 134

Section-II : Marathi Paper

1. मैत्री ... साहित्य आणि संगीताची !
प्रा. डॉ. अस्मिता नानोटी 143

2023.07.01 16:27

DR. RADHA YADAV

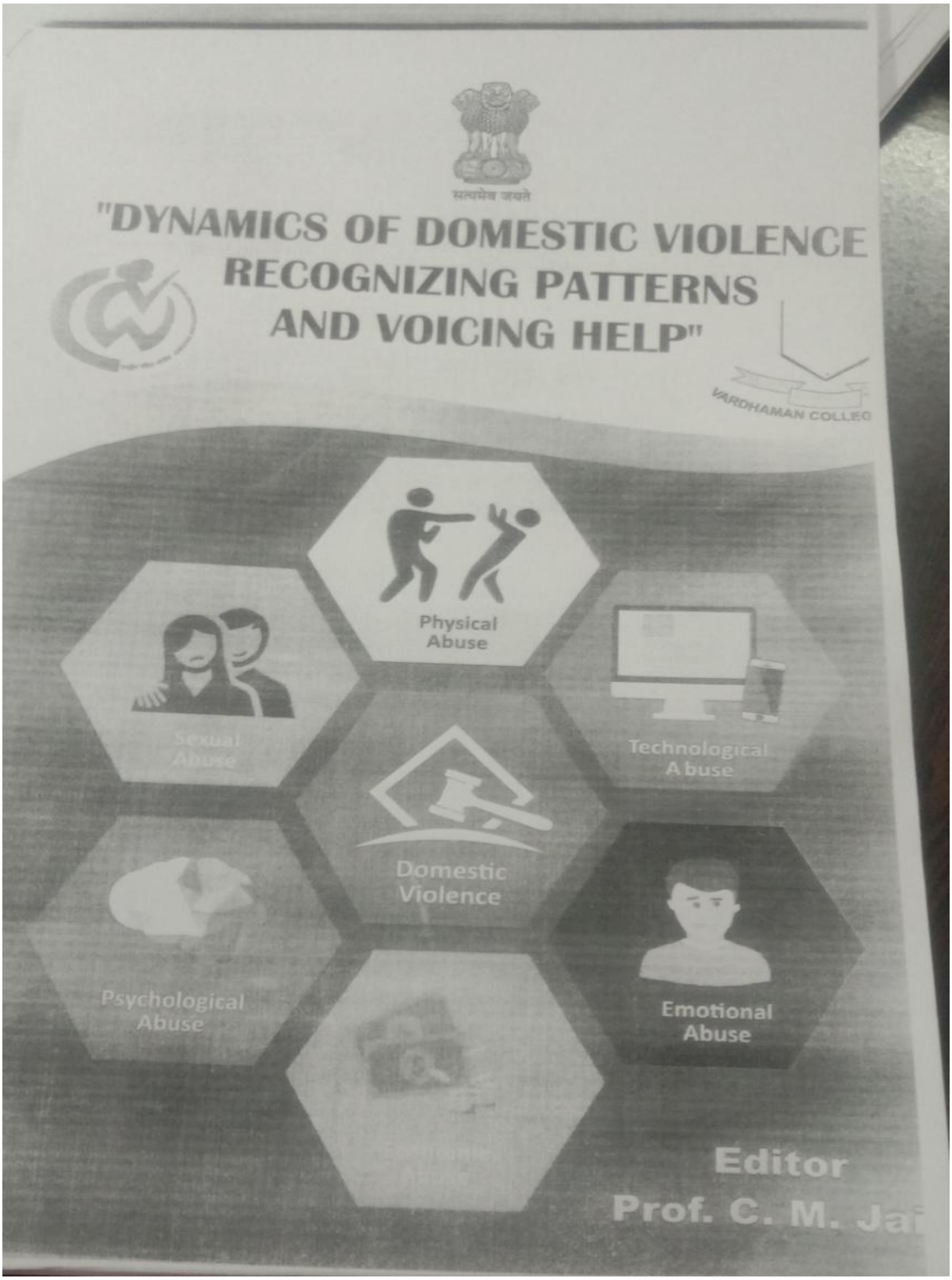

27	Domestic Violence In India : Past And Present Comparison	Ms. Laxmi Tyagi Mr. Vikash Dr. Dhirendra Singh	123
28	घरेलू हिंसा से पीड़ित महिलाओं के संवैधानिक अधिकार	डॉ. राखी उपाध्याय डॉ. निशा वालिया	127
29	विभाजनाधारित उपन्यासों झूठा सच (यशपाल) और पिंजर (अमृता प्रीतम) में नारी की त्रासदी	डॉ. शशिप्रभा	131
30	घरेलू हिंसा के विभिन्न गत्यात्मक प्रतिरूप	डॉ. अंजू बंसल डॉ. मोहित बंसल	134
31	कार्यरत् महिलाओं का यौन उत्पीडन : एक व्यवहारिक विश्लेषण	डॉ. हरेन्द्र कुमार	139
32	भारत में घरेलू हिंसा : कारण और समाधान	डॉ. अनिता ए. पाण्डेय	145
33	कामकाजी महिलाएं और लॉकडाउन में वर्क फ्राम होम का तनाव	डॉ. राधा यादव	151
34	घरेलू हिंसा	डॉ. मीनाक्षी शर्मा डॉ. भारती चौहान	154
35	भारत में घरेलू हिंसा	संगीता रानी डॉ. पद्मश्री	157
36	घरेलू हिंसा पर कोविड–19 का प्रभाव	विकास कुमार	162
37	महिलाओं के स्वास्थ्य पर हिंसा का प्रभाव	डॉ. सीता	166
38	घरेलू हिंसा–एक नासूर	सुमन चौधरी 'सुमन'	170
39	महिलाओ के प्रति हिंसा का चक्र	डॉ. पुष्पा जोशी प्रमोद कुमार	173
40	स्त्री बनने की कसौटी पर	कविता सरोज	178
1	घरेलू हिंसा – एक सामाजिक इकाई	तृप्ति अग्रवाल	179
2	भारत में घरेलू हिंसा	विनायक शर्मा	182
3	महिलाएं एवं हिंसा : सामाजिक अभिशाप	डॉ. शाजिया बेगम	186
4	घरेलू हिंसा एक चिंतनीय विषय	डॉ. सविता वर्मा 'गजल'	192
5	नारी : अतीत सेवर्तमान	डॉ. सारिका त्यागी	195
	भारतीय सिनेमा के सन्दर्भ में घरेलू हिंसा	मंजू	198
	घरेलू हिंसा : सशक्त होती भारतीय नारी के समक्ष चुनौती	शीतल	201
	महिलाएं और घरेलू हिंसा	डॉ. सीमा मलिक	204
	घरेलू हिंसा	डॉ. अनुज कुमार राजपूत	208
	भारत में घरेलू हिंसा	डॉ. चारु बंसल	210
	Domestic Violence In Tirunelveli : **Case Study Report**	Dr. C. GUNA SUNDARI	212

DR. JYOTI SHARMA

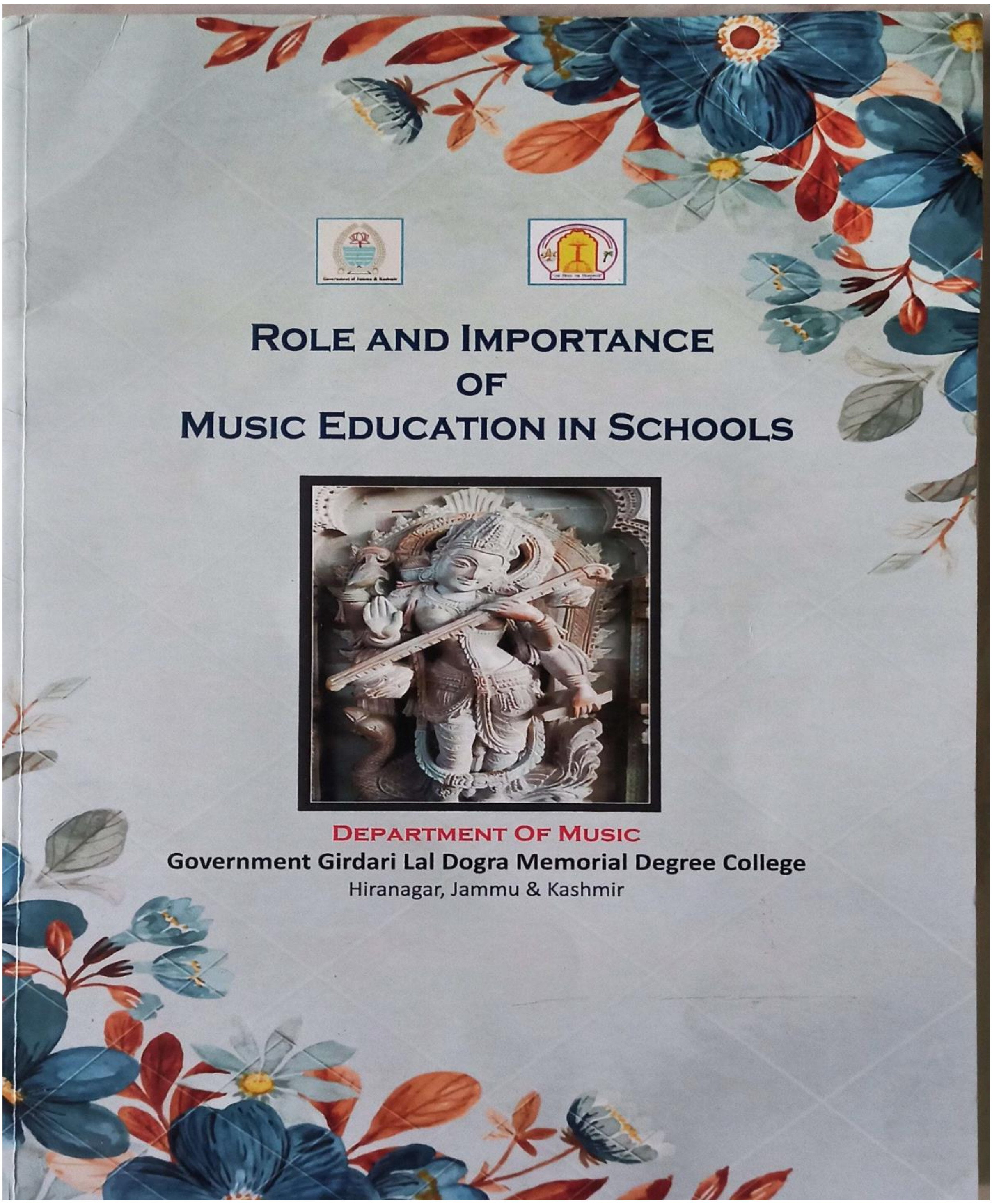

CONTENTS

PART-A

	Page No.
Principal's Message	8
सम्पादक की कलम से	9
About the College	12
Department of Music	13
About the Chief Guest	14
About the Experts	17
स्वागत संबोधनः भारत भूषण	22
संबोधन : मुख्य अतिथि	23
प्रपत्र : प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास	27
प्रपत्र : पं. विजय शंकर मिश्रा	31
प्रपत्र : प्रो. रवि शर्मा	38
प्रपत्र : डॉ. शरबरी बैनर्जी	40

PART-B

RESEARCH PAPERS/ARTICLES

S.NO	TOPIC	AUTHOR	
1	Building Character and Human Rights Culture in Schools: Intercultural Music Lifelong Experiences	Dr. Luis De La Calle	48
2	Role and Importance of Kathak Dance in Schools kids as a Positive Growth	Prof. (Dr.) Bhawna Grover	58
3	विद्यालयी शिक्षा में संगीत का महत्व	डॉ. ज्योति शर्मा	62
4	स्कूल में संगीत की शिक्षा का महत्व एवं प्रभाव	डॉ. अनुपमा सक्सेना	66
5	विद्यालय पाठयक्रम में संगीत शिक्षा की आवश्यकता – वर्तमान परिपेक्ष्य में	डॉ. कीर्ति श्रीवास्तव	69
6	शालेय स्तर पर भारतीय संगीत शिक्षा का महत्त्व	डॉ. अनया थत्ते वीणा सावले	72
7	वर्तमान विद्यालयीन संगीत शिक्षा की चुनौतियाँ और उनका निवारण	लोकेश कुमार जोशी	77
8	Importance of Music Education in School Curriculum	Samosh Kumar	86
9	Role and Importance of Music Education in School	Dr. Mukesh Kumar	91

DR. SEEMA GAUTAM

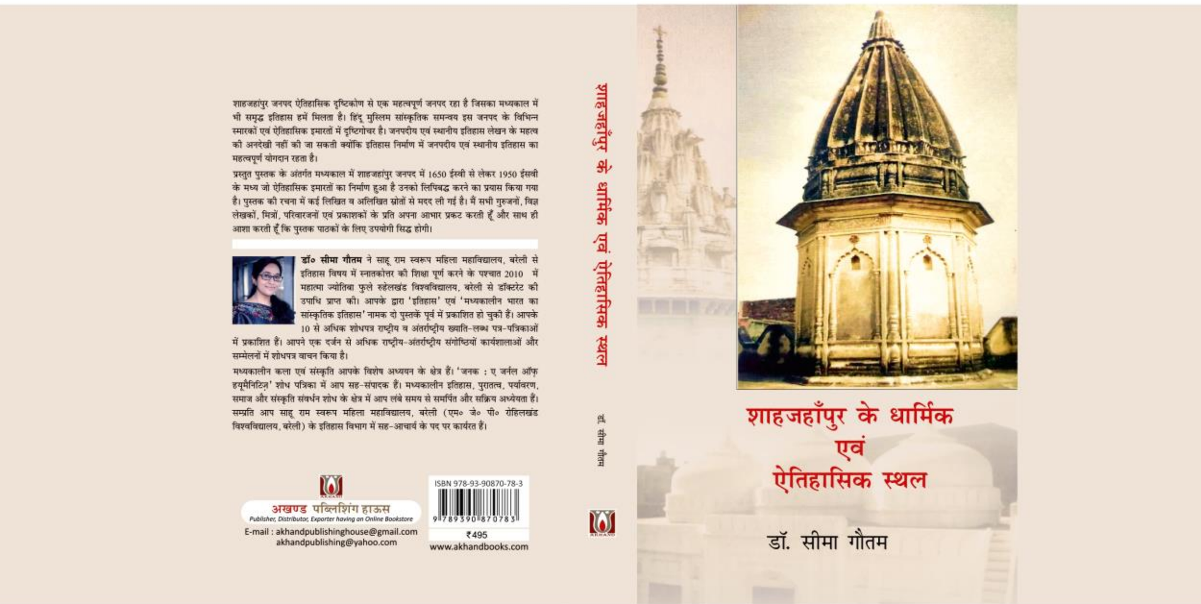

द्वारा प्रकाशित

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल-9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

शाहजहाँपुर के धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थल

संस्करण : 2022
© लेखक
ISBN: 978-93-90870-78-3

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माधयम द्वारा पुन: प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माधयम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफ़िक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

विषय-सूची

	भूमिका	*vii*
1.	शाहजहाँपुर की ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि	1
2.	शाहजहाँपुर के धार्मिक स्थल एवं उनका महत्व	32
3.	शाहजहाँपुर के प्रमुख ऐतिहासिक स्थल	77
4.	शाहजहाँपुर की स्थापत्य कला की विशेषताएं	97
5.	शाहजहाँपुर के स्थल : पर्यटन विकास की संभावनाएँ	123
	इमारतों के चित्र	*131*
	संदर्भ ग्रंथ सूची	*152*

MR. ASHUTOSH SINGH

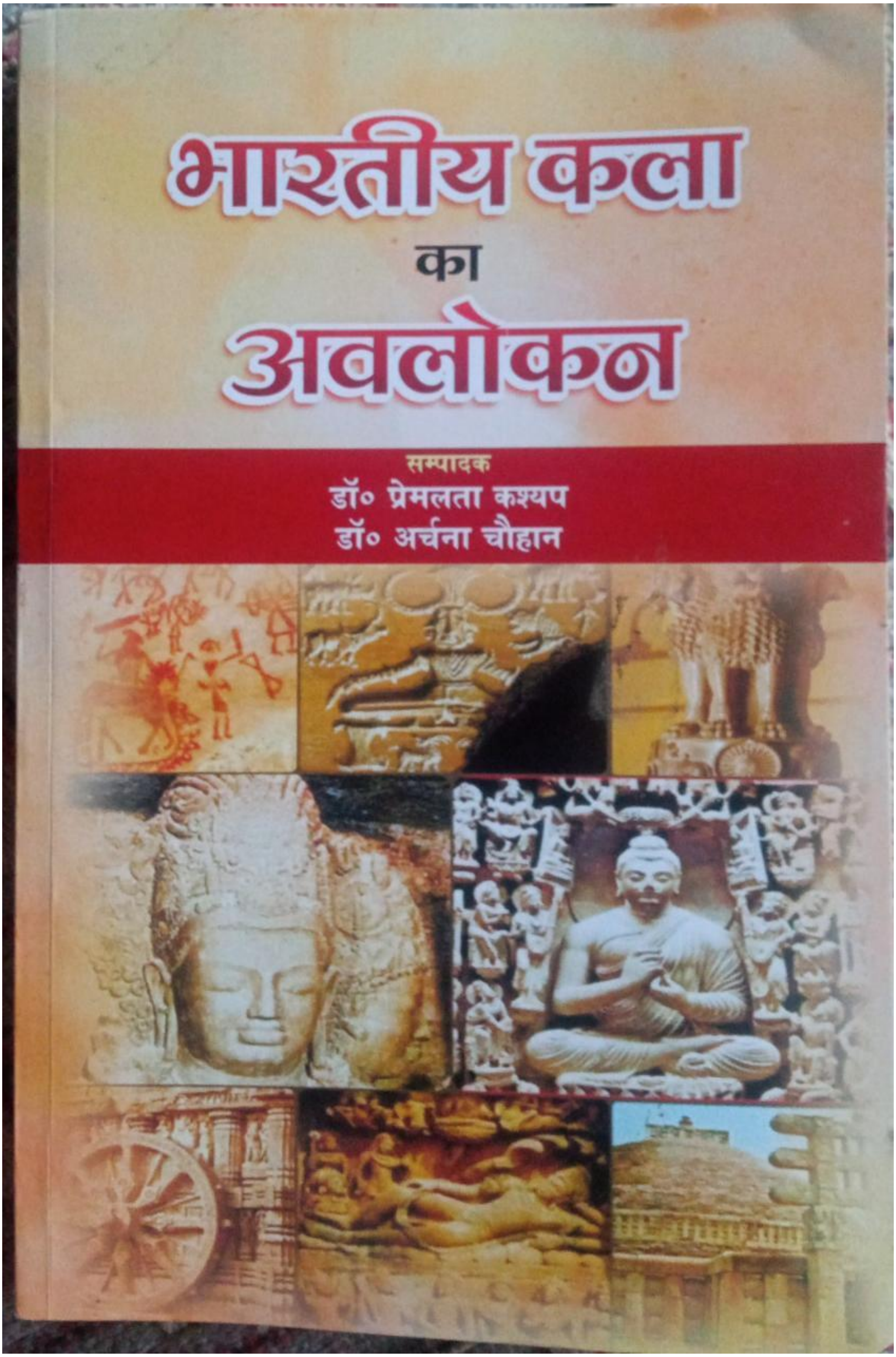
भारतीय कला
का
अवलोकन
सम्पादक
डॉ० प्रेमलता कश्यप
डॉ० अर्चना चौहान

पुस्तक अध्याय लेखक सूची

1. **डॉ० प्रेमलता कश्यप**, असिस्टेंट प्रोफेसर चित्रकला विभाग, गोकुलदास हिंदू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद (उ. प्र.)
2. **डॉ० पूर्णिमा वशिष्ठ,** सहायक आचार्य, ललित कला विभाग, चौ० चरण सिंह वि० वि०, मेरठ (उ. प्र.)
3. **डॉ० अर्चना चौहान** (डी.लिट्), असि. प्रोफेसर-चित्रकला विभाग, एस0 एस0 डी0 पी0 सी0 गर्ल्स पी0 जी0 कॉलेज, रूड़की, जिला हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
4. **शबाहत,** अंशकालिक प्रवक्ता, चित्रकला विभाग, आर0 जी0 (पी0 जी0) कॉलेज, मेरठ (उ. प्र.)
5. **आशीष कुमार मिश्र**, शोध छात्र, सुभारती यूनिवर्सिटी, मेरठ, (उ. प्र.)
6. **डॉ० अपर्णा,** विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, आर0 बी0 डी0 महिला महाविद्यालय, बिजनौर (उ. प्र.)
7. **ममता सुयाल**, असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कपकोट, बागेश्वर (उत्तराखण्ड)
8. **डॉ० पुनीता शर्मा,** एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, चित्रकला विभाग, गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स, कॉलेज, मुरादाबाद (उ0प्र0)
9. **डॉ० मृदुलात्यागी,** रमा जैन कन्या महाविघालय, नजीबाबाद (उ. प्र.)
10. **डॉ० रवीश कुमार,** एसोसिएट प्रोफेसर, चित्रकला, महाराजा हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरादाबाद (उ. प्र.)
11. **डॉ० मुक्तामणि मिश्रा,** एसोसिएट प्रोफेसर, कलाविभाग, कन्या महाविद्यालय, आर्यसमाज भुड, बरेली (उ. प्र.)
12. **आशुतोष सिंह,** असिस्टेण्ट प्रोफेसर, ड्राइंग एण्ड पेंटिंग, साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली (उ. प्र.)

12

भारतीय ''षडंग'' का संक्षिप्त परिचय

आशुतोष सिंह

सारांश

भारतीय सनातन परम्परा में जीवन जीने व् उसके ध्येय के बारे में कई सारे निर्देश दिए गए हैं। श्रुति परम्परा के आधार पर ये निर्देश गुरु शिष्य परम्परा द्वारा आगे आने वाली पीढ़ियों को दिए गए। जिन्हे बाद में संकलित कर धर्मशास्त्रों व् ग्रंथों का रूप दिया गया। चार पुरुषार्थों में ये विभाजित यह मानव जीवन धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के पड़ावों को केवल पार करने वाला न बन जाए अपितु इन पुरुषार्थों को परमार्जित कर परिष्कृत करने वाला भी हो। इसी क्रम में चारु व् कारू कलाओं में विभाजित कला को जीवन में समानान्तर चलने वाली यात्रा के रुप देखा जाने लगा। भरतमुनि ने जहां "नाट्यशास्त्र" रच कर, रस सिद्धांत या जीवन आनंद के मूल को स्थापित किया वहीं वात्स्यायन ने "कामसूत्र" रचकर सम्पूर्ण जीवनोपयोगी कलाओं का एक ऐसा खाका खींचा जो आज भी समसामयिक है। कामसूत्र में वर्णित आलेख्य ने आज परिष्कृत रूप से समस्त दृश्य जगत में अपनी एक अनूठी पहचान बना ली है। वास्तव में समय समय पर आलेख्य का समकालीन मूल्यांकन ही इस महान परिवर्तन का आधार रहा है। ११ वीं सदी का यही समकालीन मूल्यांकन "जयमंगला" नामक टीका में किया गया है , जिसमें वर्णित 'षडंग' को आज हम

अंक-03 दिसम्बर 2021

उत्कर्ष Utkarsh

ललित कलाओं को समर्पित

(चित्रकला, मूर्ति कला, फोटोग्राफी, संगीत)

शोध पत्रिका

9 789383 954759

मुख्य सम्पादक :-
कला भूषण डॉ० राजेन्द्र सिंह पुण्ढ़ीर
डी०लिट०

सतीश चन्द्रा की कृतियों में दृष्य चित्रण की अभिव्यक्ति

आशुतोष सिंह
असिस्टेण्ट प्रोफेसर
(ड्राइंग एवं पेंटिंग)
साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली

*" Nature is always bright : I do not find darkness any where in the world.
Darkness comes from within."*

- Satish Chandra

सारांश – 1712 ई में फ्रांस में जन्में कवि व दार्शनिक 'ज्यां जाक रूसो' (1712–1778) का कहना था कि "मनुष्य जन्म से स्वतन्त्र पैदा होता है। सामाजिक व परम्परागत विचार उसके नैसर्गिक विकास में बाधक रहते हैं।" यहां नैसर्गिकता का तात्पर्य ऐसे स्वभाव से है जो हमें प्रकृति द्वारा मिला हुआ है। शुद्ध, पवित्र व अनछूआ .... सतीश चन्द्र सर की कला यात्रा इसी शुद्धता का द्योतक है। अगर उत्तर प्रदेश की समकालीन कला की बात की जाये तो 'दृश्य कला' विधा में बहुत कम ही मौलिक हस्ताक्षर हमें देखने को मिलते हैं। सतीश सर की कला इसी मौलिकता की धनी रही है। इन्होंनें किसी परिवेश को पेंट करने से पहले उसे वास्तव में खुद जिया है। विद्यार्थी जीवन की कला–यात्राओं ने इन्हें एक अनन्य दृष्टि प्रदान की जिसका प्रभाव इनके चित्रों में महसूस होता है और ऐसा तभी होता है जब चित्रकार चित्रों के सृजन के पहले उन्हें खुद जीता है। इनका मुख्य विषय प्रकृति ही रही जिसमें बनायी गयी मानव आकृतियों का उपस्थित प्रकृति के समक्ष नगण्य सी प्रतीत होती है। शायद इसी सार्वभौमिकता की खोज सतीश अपने चित्रों में खोजते रहते थे। सर के समुद्री दृश्यों की उन्मुक्तता व प्रभाव हमें रोमांटिस्म की उस पराकाष्ठा की पहचान कराती है जो भावनात्मक रूप से शायद उनके अन्तःमन में उद्वेलित होती होंगी।

प्रस्तुत आलेख में हम सर के कला जीवन, कलागत विचार, रंग, पैलेट, तकनीक व सौन्दर्य दर्शन की चर्चा उनके 'दृश्य कला' चित्रों के आधार पर करेंगें। यहां पर यह बात उल्लेखित करना आवश्यक है कि जिस काल–खण्ड में सतीश सर राजकीय कला एवं शिल्प महाविद्यालय से जुड़ते हैं वह काल–खण्ड महाविद्यालय के स्वर्णिम अतीत का सुनहरा काल रहा है। लेखक स्वयं कला एवं शिल्प महाविद्यालय का छात्र रहा है, अतः उसे इन कलानुभवों के संस्मरण महाविद्यालय की गुरू–शिष्य परम्परा के माध्यम से मिलते रहें। सारांशतः कहा जाये तो इस आलेख में स्वर्णिम अतीत का एक पुर्नमूल्यांकन करने का प्रयास मात्र है।

शब्द संकेत : आत्मसात, कालजयी, दृश्य चित्रण, परिमार्जन, अनहद, स्वछन्द, रोमांसवाद, आकारमुक्त, श्रृंखला, सम्वेत, संवेदना, देशज, सिद्धि।

शोध पत्र का उद्देश्य व प्रारूप

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य उस आयाम का पुनः प्रस्थापन व मूल्यांकन करना है जो आज के समकालीन कला परिदृष्य में नितान्त आवश्यक हो जाता है। यह आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि तत्कालीन कला परिदृश्य निरन्तर तेजी से बदल रहा है। यह बदलाव जिस तेजी से हो रहा है, उस गति में यह नितान्त आवश्यक हो जाता है कि हम अपने गौरवपूर्ण अतीत की जड़ों को पहचानते हुए और उन जड़ों की गहरायी को आत्मसात करते हुए उस महान वृक्ष की शाखा के रूप पोषित हों, जो भविष्य के "कला वट" के सानिध्य में आये कला पिपासू या कला रसिक की प्यास बुझा सके।

'कला' देश व काल जैसे सामाजिक ऐतिहासिक बन्धनों से मुक्त होती है। प्रस्तुत आलेख में हम इस बात का भी मूल्यांकन करेंगे किस प्रकार उत्तर प्रदेश के प्राचीनतम कला महाविद्यालय का यह रत्न किस प्रकार विचारो व दर्शन के परिदृश्य में रोमांसवादी विचाराधारा व फ्रांसीसी क्रान्ति के वैचारिक जनक 'ज्यां जाक रूसो' (1712–78) से समन्वय स्थापित कर ले जाते है। आज के बदलते समकालीन कला परिदृश्य में जहाँ हम एक वैश्विक रूप में कला चर्चा व कला अभिव्यक्ति की बात करते है वहाँ वैचारिक व प्रयोगात्मक रूप से सतीश चन्द्रा की कला तात्कालीन कला परिदृश्य में कितनी वैश्विक समीचीन होती है। आज जब हम कला जगत की बात करें तो हम कला छात्रों, कलाकारों व कला रसिकों के रूप कला जगत को सरलतम रूप से विभाजित कर सकते हैं। इस कड़ी में हमारे कला छात्र–छात्राओं के लिए यह जानना परम आवश्यक हो जाता है किस प्रकार हमारे पथप्रदर्शक कला गुरूओं ने किस गंभीरता से कला सृजन किया, किस प्रकार जीवन की उन्मुक्तता उनके कला कर्मो में परिलक्षित होती है और किस तरह एक सच्चे कलाकार का जीवन उसकी कला यात्रा के सामने बौना पड़ जाता है। किस तरह उस कलाकार के रंग उसके जीवन के रंग बन जाते है, कैसे आकारों का बन्धन व आकारों से मुक्त होना उस कलाकार के सामाजिक जीवन व उससे बारम्बार मुक्त होते उसके बालसुलभ व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब बन जाता है.....कैसे एक कलाकार एक स्वतन्त्र, उन्मुक्त व असीम विचारों को जीता हुआ, नश्वर जीवन से मुक्त हो अमरता का स्वाद चख लेता है।

हम यह जानने की कोशिश करेंगे कि एक कलाकार कैसे उस परम रस का पान कर जाता है जिसके लिए सन्यासी, मलंग व अन्य दर्शन, एक जटिल विषमताओं की बात करते हैं परन्तु एक कलाकार समाज में रह कर भी सरलतम रूप से उस 'अनहद' ज्ञान का साक्षात्कार कर जाता है जिसकी खोज में मानव इतिहास की सैकड़ों पीढ़ियां व सभ्यता खप गई।

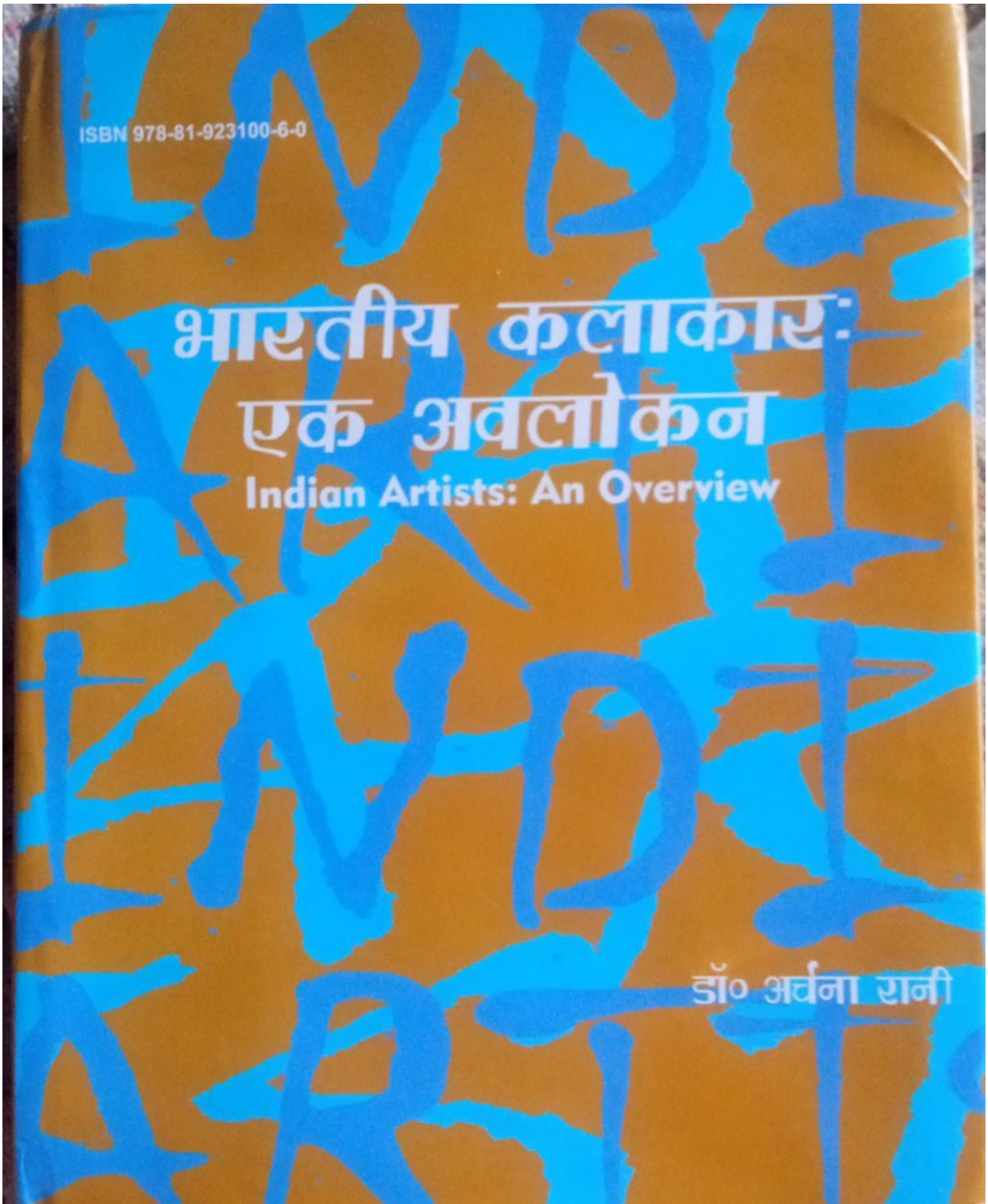
ISBN 978-81-923100-6-0
भारतीय कलाकार: एक अवलोकन
Indian Artists: An Overview
डॉ० अर्चना रानी

अध्याय 20

अमृता शेरगिल का एक पुनर्मूल्यांकन: रंग योजना व आकृतियों के आधार पर

आशुतोष सिंह
असिस्टेण्ट प्रोफेसर (ड्राइंग एण्ड पेंटिंग), साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली।

सारांश

अगर आधुनिक भारतीय चित्रकला 'माता' के लिए किसी महिला कलाकार को नामित करें तो निश्चय ही अमृता शेरगिल का नाम सर्वोपरि होगा एवं स्वीकार्य भी– चित्रकार सुबोध केरकर

निश्चय ही अमृता, स्वतन्त्रता पूर्व की आधुनिक भारतीय चित्रकला के परिदृश्य पर अकेली ऐसी चमकती चित्रकार हैं जिन्होनें अपनी आभा से न केवल भारतीय कला परिदृश्य को आलोकित किया, अपितु कई अन्य भारतीय महिला चित्रकारों के लिए, पुरुष वर्चस्व वाले समाज में खुद की अस्मिता को पोषित करने का रास्ता पुष्ट किया। भारतीय आधुनिक कला की जब बात करते हैं तो हम उस समकालीन कला की बात कर रहे होते हैं जो समग्र रूप से भारतीय प्रायद्वीप के मूल स्वभाव का पुट अपने आप में समेटे हुए हो। एक विस्तृत पटल पर इस बात के मायने बहुत फेले हुए हैं। परन्तु चमत्कार की बात यह है कि कलाकार अपने मौलिक अभिव्यक्ति द्वारा बहुत हद तक इस विस्तृत तादात्म्य का आत्मचिन्तन स्वयं की कला द्वारा स्थापित कर पाता है। कला अभिव्यक्ति की यह प्रयास ही उस कलाकार को मूल्यांकन की श्रेणी के उच्चतर शिखर पर पहुँचाती है। अगर भारतीय आधुनिक चित्रकला की बात की जाये तो जो प्रारम्भिक नाम निकल कर आते हैं उनमें अमृता शेरगिल का नाम प्रथम सूची में शामिल किया जाता है। अमृता शेरगिल न केवल कालखण्ड के हिसाब से उन प्रथम चित्रकारों में आती हैं अपितु वे अपनी कला के माध्यम से एक समग्र भारतवर्ष की भावना को अपने चित्रों के माध्यम से प्रकट करतीं हैं। अमृता शेरगिल अपने समकालीन दौर की वह पहली कलाकार हैं जो न केवल सांस्कृतिक रूप से भिन्न–भिन्न दर्शनों की साक्षी रहीं, अपितु विधा रूप में भी पूर्व व पश्चिम की परिपाटी के संगम रूप में स्थापित हो पायीं। ईश्वर प्रदत्त एक बहुत अल्प जीवन में अमृता शेरगिल भारतीय चित्रकला के संसार में बिजली के समान पदार्पण करतीं हैं और उसी की तरह ही अल्प समय ही सही, दैदीप्यमान होकर सम्पूर्ण कला जगत को आलोकित कर जाती हैं। अमृता शेरगिल का यह मूल्यांकन उनके व्यक्तित्व कला–कौशल व जीवन के समन्वय का प्रयास मात्र है। समय–समय पर किये गये मूल्यांकन न केवल कलाकार की कला के भिन्न–भिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं अपितु इस बात का भी द्योतक होते हैं कि कलाकार के व्यक्तिगत जीवन का उसकी कला पर कितना गहरा प्रभाव पड़ता है। कलाकार का देशकाल व अन्य समकालीन कलाकारों के परिचायक कलाकर्म के आधार पर भी तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। उक्त सभी तुलनात्मक या मूल्यांकन के मापदण्डों का यदि बृहद अध्ययन करें तो अमृता शेरगिल का व्यक्तित्व व कलाकर्म दोनों ही लीक से अलग हट कर एक वैशिष्ट्य को प्राप्त होता है।

शब्द संकेत – कलाकार, आधुनिक भारतीय, समकालीन कला, कलाकर्म, मूल्यांकन, अमृता शेरगिल।

शोध–पत्र का उद्देश्य व प्रारूप

प्रस्तुत शोध पत्र का आधारभूत लक्ष्य ऐसा शोधपत्र प्रस्तुत करना है जो समग्र रूप से तुलनात्मक व वैशिष्ट्य को सहेजे हुए हो। साथ ही इस शोध पत्र का उद्देश्य ऐसे प्रपत्र को प्रस्तुत करना भी है जो नए कला विद्यार्थियों, कला रसिकों व शोध छात्रों के लिए एक तुलनात्मक व पुनर्मूल्यांकित नवीन पटल प्रस्तुत करता हो।

DR. DEEPSHIKHA SINGH

106
117
121
128
134
143
153
163
170
177
182
187
200

16. छत्तीसगढ़ के लोकगीतों की रानी ददरिया: विवेचनात्मक अध्ययन 231
-डॉ. श्रद्धा चोपड़ा

17. अन्य विषयों के साथ संगीत का अंतर्संबंध 242
-डॉ. दीप शिखा सिंह

18. मध्यप्रदेश की बंजारा जनजाति का इतिहास, भाषा शैली एवं उनकी लोक संस्कृतियाँ 248
-किशोरचंद राठोड़

19. भारत में संगीत का विकास 259
-डॉ. मधुसुदन भट्ट

20. रामायण काल और महाभारत काल में संगीत की स्थिति और महत्व 274
-प्रो. प्रीति वर्मा

21. भारत की अमूल्य संपत्ति राग एवं उसके अनिवार्य तत्वों (लक्षण) का ऐतिहासिक विकास 284
-प्रियंका शेन्डे

22. संगीत चिकित्सा: एक वरदान 293
-शलाका तुकाराम निकम

23. मानवी जीवन में संगीत का महत्व 298
-मानसी सचिन सरदेशपांडे

24. शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में मध्यप्रदेश के संगीतज्ञों का योगदान (नवम्बर 1956 से अद्यतन तक) 302
-नन्दलाल सिंह रघुवंशी

25. भारतीय संगीत के विकास में मालवा अंचल की महिला कलाकारों का योगदान 313
-डॉ. बी. वर्षा

26. धर्म और संगीत 319
-सुनील कुमार भट्ट

27. भारतीय संगीत के विविध रंग (गायन, वादन, नृत्य) 326
-अपराजिता पटेल

17

अन्य विषयों के साथ संगीत का अंतर्संबंध

डॉ दीप शिखा सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर संगीत विभाग
साहू राम स्वरुप महिला महाविद्यालय, बरेली
E-mail: deepshikhasinghhh@gmail.com; Mob: 8865891199

सार

इस शोध पत्र के अंतर्गत संगीत के अन्य विषयों के साथ अंतर्संबंध को दर्शाते हुए अन्य विषयों जैसे भाषा विषय हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत, गणित, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, इतिहास, ज्योतिष आदि में संगीत की एक महत्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इस शोध पत्र द्वारा निश्चित ही भविष्य में अन्य विषयों की भांति संगीत के महत्व को समझते हुए उसे एक प्रभावी आवश्यक विषय के रूप में स्वीकृति प्रदान की जाएगी ।

परिचय

संपूर्ण सृष्टि का संचालन कई घटकों के समायोजन अथवा अंतर्संबंध द्वारा

ही संभव है जैसे– मनुष्य का विकास हुआ वह नवीन ज्ञान के विभिन्न आयामों को प्राप्त करता गया आज मानव ने अपने ज्ञान से अनेक असाध्य विषयों को साध्य बना लिया है और इसमें शिक्षा की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है जिसके आधार पर विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्तकर उस ज्ञान का प्रयोग अपने जीवन को सरल सुगम उच्च स्तरीय बनाने हेतु किया है शिक्षा के सभी विषयों से संबंधित ज्ञान मनुष्य के सुलभ जीवन के लिए अति आवश्यक है यदि संगीत के विषय में बात की जाए तो मनुष्य के जन्म से ही संगीत स्वतः ही उसके साथ जुड़ जाता है। लय ताल का इससे अच्छा उदाहरण और क्या हो सकता है कि मनुष्य की शारीरिक संरचना ही लय ताल पर आधारित है नाड़ी का चलना, हृदय का धड़कना, पलकों का झपकना एक निश्चित समय अवधि के अंतर से होता है और समय की इस समान गति को ही लय कहते हैं और इस गति को नापने का साधन ही ताल है अब यदि संगीत की अन्य विषयों के साथ संबंध पर बात की जाए तो संगीत किसी ना किसी रूप में लगभग सभी विषयों में निहित है फिर चाहे वह भाषा विषय हो जैसे हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, विज्ञान हो, इतिहास हो, अर्थशास्त्र, भूगोल, गणित हो, मनोविज्ञान हो, समाज शास्त्र हो यहां तक कि ज्योतिष से भी संगीत का अंतर्संबंध है। यह किस प्रकार है इसी को इस शोध पत्र के माध्यम से स्पष्ट करना है।

सर्व प्रथम यदि भाषा विषयों की बात की जाए तो भाषा के बिना तो कोई भी विषय संभव ही नहीं है प्रत्येक विषय के पठन–पाठन हेतु भाषा आवश्यक है संगीत भी इससे अछूता नहीं है। संगीत के राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पठन–पाठन हेतु भाषा विषय की आवश्यकता होती है। हिंदी' के अंतर्गत मात्रा, रस, छंद का संगीत की बंदिशों में अत्यधिक महत्व है इसके बिना संगीत निष्प्राण है हिंदी अंग्रेजी उर्दू की कविताओं नज्मों में यदि संगीत का समावेश कर दिया जाता है तो ना सिर्फ उनका श्रवण आनंददायक हो जाता है अपितु एक अबोध बालक भी लयात्मकता के कारण उन्हें आसानी से कंठस्थ कर लेता है। यदि संस्कृत के विषय में संगीत की बात करें तो संगीत का आदिग्रंथ नाट्य शास्त्र संस्कृत में ही रचित है हमारे संगीत का ग्रंथ सामवेद व उसकी ऋचायें संस्कृत में ही है संगीत रत्नाकर, गीतगोविंद और ना जाने कितने ही संगीत ग्रंथ संगीत की विशेषताओं, शब्दावलियों को दर्शाने हेतु अनेक संस्कृत के श्लोकों का प्रयोग किया जाता

है। उर्दू में कितनी गजलें नज्में संगीत हेतु लिखी गई है इस प्रकार भाषा विषयों से संगीत का अटूट संबंध है।

गणित के बिना तो संगीत संभव नहीं है संगीत की समस्त बंदिशें फिर चाहे वह गायन में हो अथवा वादन में निश्चित मात्राओं व तालों के बिना असंभव है और यह मात्राएं बता लें निश्चित संख्याओं में बंधी होती हैं और इन संख्याओं में ही उलट–पलटकर विभिन्न लयकारियां है जिनका प्रयोग कर कोई भी संगीतकार सब को विस्मृत कर देता है। इन संख्याओं में लेशमात्र की त्रुटि होने पर संगीत लय व तालबद्ध नहीं रहता। उदाहरण स्वरूप यदि कोई कलाकार 12 मात्रा की बंदिश गा रहा है अथवा बजा रहा है और त्रुटिवश एक मात्रा घट गई या बढ़ गई तो जिस ताल में प्रस्तुति दे रहा है। वह किसी अन्य ताल अर्थात घटने पर 11 मात्रा और बढ़ने पर 13 मात्रा की हो जाएगी अर्थात संगीतमें गणित अर्थात संख्या का अत्यधिक महत्व है।

यदि विज्ञान से संगीत के संबंध के विषय में विचार किया जाए तो भौतिक विज्ञान के अंतर्गत आने वाली शब्दावली जैसे ध्वनि', कंपन, आंदोलन, प्रतिध्वनि, गति, तरंग, घर्षण आदि संगीत में भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। ध्वनि तो संगीत का आधार है। ध्वनि के अंतर्गत तारता, तीव्रता का भी संगीत में विशेष महत्व है बहुत से वाद्यों के वादन ही आंदोलन व कंपन पर आधारित हैं। अतः ऐसे वाद्यों का निर्माण भी बिना वैज्ञानिक आधार के संभव नहीं है। आजकल विज्ञान के आधार पर निर्मित इलेक्ट्रोनिक वाद्य यंत्रों का खूब प्रयोग किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त चिकित्सा के क्षेत्र में जो विज्ञान एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है संगीत इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है जिसे म्यूजिकथेरेपी के आधार में उपयोगी सिद्ध हो रही है।

यदि मनोविज्ञान' की बात की जाए तो संगीत का मानसिकता से गहरा संबंध है एक तरीके से देखा जाए तो संगीत मानसिक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है यह व्यक्ति की मनोदशापर एक गहरा प्रभाव छोड़ता है यही कारण है कि सुप्त मनःस्थिति को भी जागृत करने की क्षमता रखता है। शायद इस कारण से ही इसका प्रयोग करके अनेक असाध्य मानसिक रोगों का उपचार संभव है। सितार, बांसुरी मन को कैंद्रित करने हेतु, तबला व अन्य अवनद्ध वाद्य पाचन संबंधी रोग उपचार हेतु, मध्यम आवाज में शास्त्रीय

संगीत के अंतर्गत ईश्वर स्तुति की बंदिशें हृदय संबंधी रोगों हेतु व अनेक रागों का प्रयोग विभिन्न रोगों के उपचार हेतु किया जाता है।

कई शोधों से यह भी स्पष्ट हुआ है कि ज्योतिष में भी संगीत की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। हर ग्रह की अपनी प्रकृति है। उदाहरण– चंद्रग्रह ठंडा है सूर्यग्रह गर्म। अब जिसका सूर्य ठीक नहीं है ग्रहदशा के अनुसार वह गर्म प्रकृति के राग अथवा संगीत सुनें यदि चंद्र की दशा ठीक नहीं है तो ठंडी प्रकृति के राग सुनें। जिस प्रकार मस्तिष्क शांति के लिए सच्चा मोती चांदी में धारण करने को बताया जाता है उसी प्रकार वे राग जो शांत प्रकृति के माने जाते हैं उनको सुनने से भी लाभ प्राप्त होता है।

जहां तक समाज' से संगीत के संबंध का प्रश्न है तो साहित्य के समान संगीत भी समाज का दर्पण है किसी भी स्थान के संगीत में वहां की संस्कृति व सभ्यता की छाप होती है। मनुष्य के जन्म से मृत्यु तक संगीत समाहित है सभी सामाजिक संस्कार उदाहरण स्वरूप जन्मसंस्कार, मुंडन, विवाह, प्रत्येक त्यौहार हेतु समाज में विभिन्न गीतों को गाए जाने का प्रचलन है। किसी भी स्थान के संगीत से वहां की भाषा भी प्रदर्शित होती है इस प्रकार संगीत व समाज का गहरा संबंध है इसका अध्ययन विभिन्न शोधों द्वारा समाज शास्त्र विषय के अंतर्गत भी किया जा रहा है।

संगीत मात्र मनोरंजन का साधन न रहकर धन उपार्जन हेतु भी एक अच्छा माध्यम बन गया है। देश की आय का एक बड़ा हिस्सा संगीत द्वारा भी आता है किसी भी क्षेत्र की आय को दो तथ्यों के योग से मापा जाता है पहला है वस्तु दूसरा है सेवा। यदि संगीत के विषय में बात की जाए तो वस्तु के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रों की बिक्री तथा सेवा के अंतर्गत संगीत के अंतर्गत आने वाली समस्त नौकरियां या व्यवसाय आते हैं। आंकड़ों के अनुसार टेलीविजन द्वारा 2,850 करोड़ कर अर्जित होता है। 20168 F.T.E रोजगार सं, रेडियो द्वारा 2170 करोड़ कर, 4,230 F.T.E रोजगार, कार्यक्रमों व समारोह द्वारा– 1280 करोड़ कर 6010 F.T.E रोजगार, फिल्मों द्वारा– 2090 करोड़ कर, 5590 रोजगार ऑडियो द्वारा OTT 270 करोड़ कर, 810 F.T.E है। यानी देश की आय में संगीत एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि समाज में संगीत कलात्मकता और रचनात्मकता को स्थान दिया जाए तो विविधता या नवीनता का संचार हो सकता है और इकहरे अर्थव्यवस्था के कारण अर्थव्यवस्था अव्यवस्थित होने की आशंका घट जाती है। भारत में

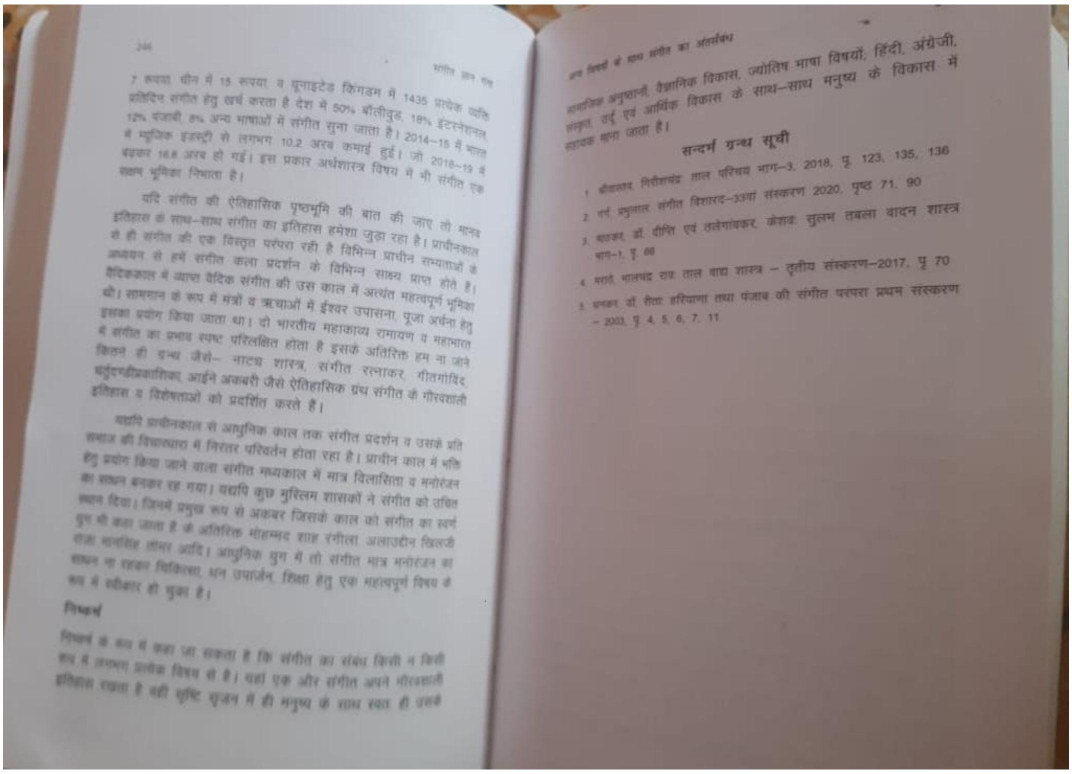

7 रुपया, चीन में 15 रुपया, व यूनाइटेड किंगडम में 1435 प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन संगीत हेतु खर्च करता है देश में 50% बॉलीवुड, 18% इंटरनेशनल, 12% पंजाबी, 8% अन्य भाषाओं में संगीत सुना जाता है। 2014–15 में भारत में म्यूजिक इंडस्ट्री से लगभग 10.2 अरब कमाई हुई। जो 2018–19 में बढ़कर 16.8 अरब हो गई। इस प्रकार अर्थशास्त्र विषय में भी संगीत एक सक्षम भूमिका निभाता है।

यदि संगीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की बात की जाए तो मानव इतिहास के साथ–साथ संगीत का इतिहास हमेशा जुड़ा रहा है। प्राचीनकाल से ही संगीत की एक विस्तृत परंपरा रही है विभिन्न प्राचीन सभ्यताओं के अध्ययन से हमें संगीत कला प्रदर्शन के विभिन्न साक्ष्य प्राप्त होते हैं। वैदिककाल में व्याप्त वैदिक संगीत की उस काल में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका थी। सामगान के रूप में मंत्रों व ऋचाओं में ईश्वर उपासना, पूजा अर्चना हेतु इसका प्रयोग किया जाता था। दो भारतीय महाकाव्य रामायण व महाभारत में संगीत का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है इसके अतिरिक्त हम ना जाने कितने ही ग्रन्थ जैसे– नाट्य शास्त्र, संगीत रत्नाकर, गीतगोविंद, चतुर्दण्डीप्रकाशिका, आईने अकबरी जैसे ऐतिहासिक ग्रंथ संगीत के गौरवशाली इतिहास व विशेषताओं को प्रदर्शित करते हैं।

यद्यपि प्राचीनकाल से आधुनिक काल तक संगीत प्रदर्शन व उसके प्रति समाज की विचारधारा में निरंतर परिवर्तन होता रहा है। प्राचीन काल में भक्ति हेतु प्रयोग किया जाने वाला संगीत मध्यकाल में मात्र विलासिता व मनोरंजन का साधन बनकर रह गया। यद्यपि कुछ मुस्लिम शासकों ने संगीत को उचित स्थान दिया। जिनमें प्रमुख रूप से अकबर जिसके काल को संगीत का स्वर्ण युग भी कहा जाता है के अतिरिक्त मोहम्मद शाह रंगीला, अलाउद्दीन खिलजी, राजा मानसिंह तोमर आदि। आधुनिक युग में तो संगीत मात्र मनोरंजन का साधन न रहकर चिकित्सा, धन उपार्जन, शिक्षा हेतु एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में स्वीकार हो चुका है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि संगीत का संबंध किसी न किसी रूप में लगभग प्रत्येक विषय से है। यहां एक और संगीत अपने गौरवशाली इतिहास रखता है वहीं सृष्टि सृजन में ही मनुष्य के साथ स्वतः ही उसके

सामाजिक अनुष्ठानों, वैज्ञानिक विकास, ज्योतिष भाषा विषयों; हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू एवं आर्थिक विकास के साथ–साथ मनुष्य के विकास में सहायक माना जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र: ताल परिचय भाग–3, 2018, पृ. 123, 135, 136
2. गर्ग, प्रभुलाल: संगीत विशारद–33वां संस्करण 2020, पृष्ठ 71, 90
3. पाठक, डॉ. दीप्ति एवं तलेगांवकर, केशव: सुलभ तबला वादन शास्त्र भाग–1, पृ. 66
4. मराठे, भालचंद्र राव: ताल वाद्य शास्त्र – तृतीय संस्करण–2017, पृ. 70
5. प्रभाकर, डॉ. रीता: हरियाणा तथा पंजाब की संगीत परंपरा प्रथम संस्करण – 2003, पृ. 4, 5, 6, 7, 11

Dr. Ruchi Singhal

First Published : 2021
ISBN : 978-93-92240-03-4
Price : ₹ 1650
© Editor
Published by
Yking Books
H.O.: 18, Jain Bhawan, Opp. N.B.C., Shanti Nagar, Jaipur - 302006
Tel. 0141-2221456, 09414056846 (M)
Showroom: G-13, S.S. Tower, Dhamani Street, Chaura Rasta, Jaipur - 302003
Tel. 0141-4020251
E-mail: ykingbooks@gmail.com
Laser Typesetting by
Vikram Kumar Sharma, Jaipur
Printed at
Trident Enterprises, New Delhi
Galaxy Z Fold3 5G

9. Cursed Lives of Devadasis
—Neha Vatsal 87

10. Kamala Das's Iconoclast Approach to Marriage
—Dr. Pojan Prasad 112

11. Marginalization and otherness in the Selected Short-stories of Hanif Kureishi's *Love in a Blue Time*
—Dr. Mohd. Faiez 118

12. A Study of Crushing Soul of Bakha (With Special Reference to Anand's *Untouchable*)
—Dr. Indu Singh Rajput 127

13. The Reflection of Indian Culture in Tabish Khair's Novel *The Bus Stopped*
—Dr. Kalpana Agrawal, Mohd. Rafiq 136

14. Marginalization in American Society with Special Reference to Eugene O'Neill's Major Black Characters
—Ruchi Singhal 147

15. A Saga of Inexpressible Miseries of the Scavengers in Mulk Raj Anand's Novel *Untouchable*
—Dr. Sunil Srivastava 153

16. The Triumph of Human Spirit of the Marginalized Masses: In the Novels of John Steinbeck
—Dr. Monika Saxena 159

17. 'Kanyadaan'—As a Wrong Philosophy of An Ineffectual Dreamer
—Dr. Charu Mehrotra 172

18. Mapping Dalit Aesthetics of Suffering and Resistance in the Poetic World of Aruna Gogulamanda, Kalyani Thakur Charal and Meena Kandasamy
—Dr. Prasenjit Panda, Runjhun Pandey 179

19. Mahesh Dattani: An Innovative Writer of Marginalized Community
—Dr. Sanjay Johari 188

20. Common Life Marginalized Female Characters in the Novels of Kamala Markandaya
—Dr. Shanker Singh Solanki 194

21. Homeless in My Land: A Study in Marathi Dalit Short Stories 208
—Dr. B.N. Gupta

Contributors 223

14

Marginalization in American Society with Special Reference to Eugene O'Neill's Major Black Characters

Ruchi Singhal

American Society still presents a case of contrast, where racial minorities stand distinctly apart as marginalized society as compared to White people of the land. This marginalized society of African-Americans, though rich in population is the oppressed group of America. Recent event at Atlanta, where a Black man is shot dead by White police officer followed by violent and non-violent protests, brings to the surface—the marginalization in what is considered as world's most liberal society. The study, therefore, of marginalized groups as part and parcel of society even in modern times became important.

Eugene O'Neill, the most celebrated of dramatists of all times in American history, through his plays, has attempted to highlight this aspect of American society. His plays deal with the society of America of the first half of twentieth century, which in a way reflects the American society of all times in general. O'Neill once said, "I am going on the theory that the United States, instead of being the most successful country of the world, is the greatest failure."[1]

In fact, all the minorities which migrated to the United States have been the victim of the racial injustice, discrimination and rejection. O'Neill was keenly aware about this degradation and prejudice in the form of marginalization, especially of African-Americans. Through his dramas, he seems to be searching for the missing element with a restless curiosity in the life of this oppressed marginalized group. His dramas have demonstrated that how good an observer he is to understand the prejudices against the Blacks.

Dr. Beena Yadav

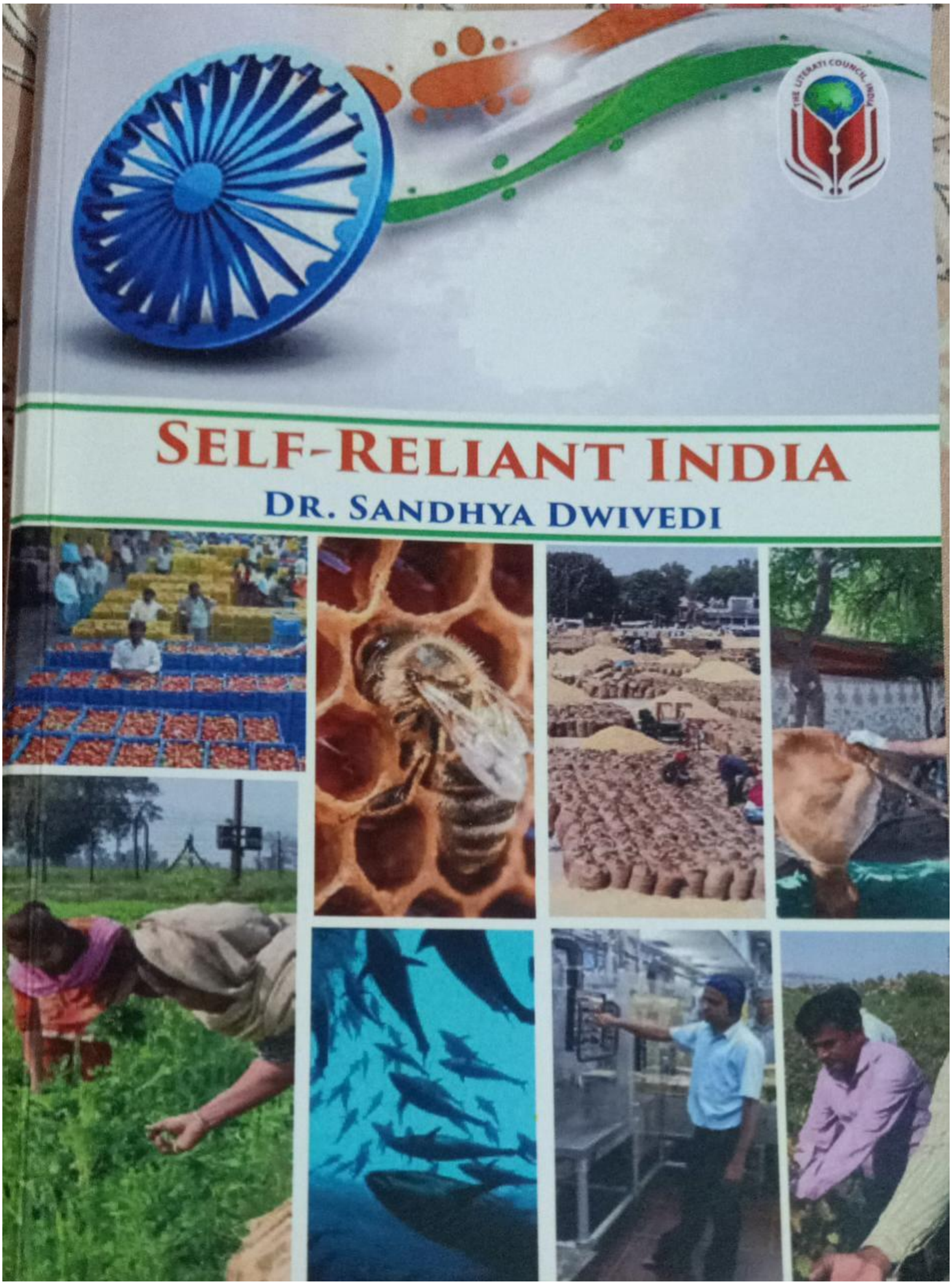

The Global Impact of COVID-19 and Self-Reliant India

—**Dr. Arun Kumar Yadav**
Assistant Professor of English
Swami Shukdevanand Post Graduate College,
Shahjahanpur, Uttar Pradesh, (India)

—**Dr. Beena Yadav**
Assistant Professor of English
Sahu Ram Sawroop Mahila Mahavidyalaya,
Bareilly, Uttar Pradesh, (India)

The word 'Atmanirbhara Bharata' which translates in English as 'self-reliant India' is a Hindi phrase used and popularized by the Prime Minister of India and the Government of India concerning economic development in the country during and after the COVID-19 pandemic. In this context, the term is used as an umbrella concept to making India a bigger and more important part of the global economy, pursuing policies that are efficient, competitive, and resilient, and being self-sustaining and self-generating. (Wikipedia)

The above phrase reminds me of one of the famous statements of an American poet and philosopher Ralph Waldo Emerson who led the

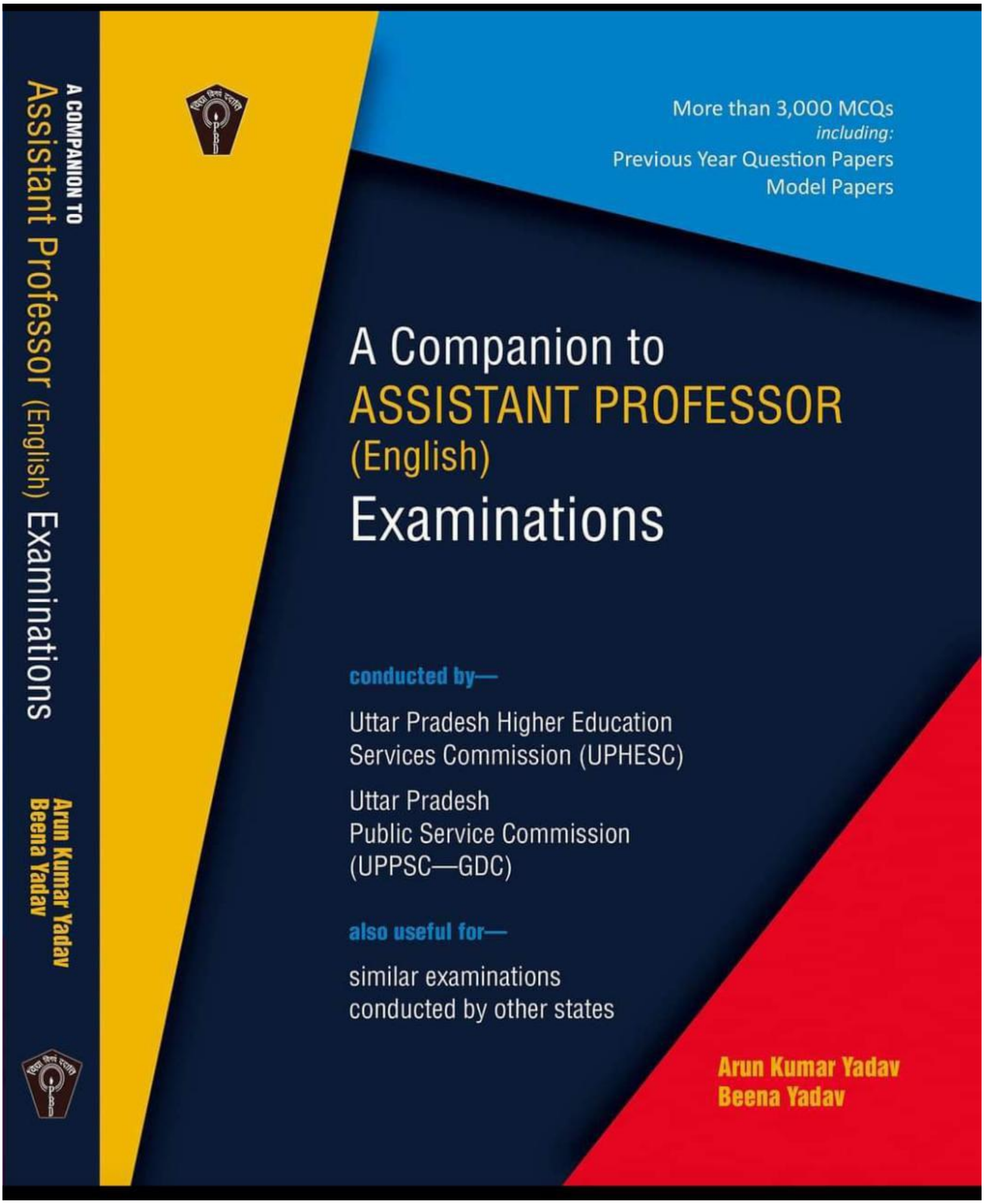
A COMPANION TO
Assistant Professor (English) Examinations
Arun Kumar Yadav
Beena Yadav
More than 3,000 MCQs
including:
Previous Year Question Papers
Model Papers
A Companion to
ASSISTANT PROFESSOR
(English)
Examinations
conducted by—
Uttar Pradesh Higher Education
Services Commission (UPHESC)
Uttar Pradesh
Public Service Commission
(UPPSC—GDC)
also useful for—
similar examinations
conducted by other states
Arun Kumar Yadav
Beena Yadav